VIDYA - A JOURNAL OF GUJARAT UNIVERSITY

Peer-Reviewed, Multidisciplinary & Multilingual Journal

ISSN: 2321-1520 **E-ISSN:** 2583-3537

गुजरात का गौरव : देवनी मोरी

डा. हरपाल बौद्ध

एसोसिएट प्रोफ़ेसर, इतिहास विभाग
गुजरात यूनिवर्सिटी, अहमदावाद, गुजरात
(मो) ७६००३६३७२५
बौद्ध पुरातत्व स्थल

सारांश

गुजरात की भूमि प्राचीन काल से ही धम्मभूमि रही है और महाकारूणिक बुद्ध के विचारों से आलोकित रही है I गुजरात के अधिकांश जिलों में आज भी हमें बौद्ध धम्म से जुड़े अनगिनत अवशेष देखने को मिल रहे हैं और अभी भी खुदाई में बौद्ध धम्म से जुड़े अवशेष बहुतायत में प्राप्त हो रहे हैं I गुजरात के प्रसिद्ध बौद्ध स्थलों में देवनी मोरी (शामलाजी), गिरिनगर (जूनागढ़), आनंदपुर (वड़नगर), तारंगा, भरूच, कच्छ, उना साणावाक्य, खाम्भलिडा आदि हैं I इनमें देवनी मोरी का महत्वपूर्ण स्थान है क्योंकि यह धम्म नगरी थी और यहाँ से महाकारूणिक बुद्ध की श्रेष्ठ धातुएं (अस्थियां) प्राप्त हुई हैं I

देवनी मोरी उत्तर गुजरात में अरवल्ली जिले में तहसील भिलोड़ा में मेश्वो नदी के सामने तट पर स्थित है I यहां भोज राजा की टेकरी स्थित है जहां उत्खनन हुआ है और महाविहार, पश्चिमी क्षत्रप राजाओं के सिक्के, और बुद्ध की श्रेष्ठ धातुओं (अस्थियों) का अलंकृत पात्र (Box) प्राप्त हुआ है I देवनी मोरी में पश्चिमी क्षत्रप राजाओं (ई.स. २३ – ई.स. ४००) के समय का महा विहार मिला है I यह स्थान राजस्थान के डुंगरपुर और गुजरात की सीमा पर स्थित है और यहाँ अरवल्ली पर्वतमाला के छोटे–मोटे पहाड़ हैं I यह स्थान अत्यंत सुंदर और मनोहर है I ११ फरवरी १९६० को बड़ोदरा की महाराजा सयाजीराव यूनिवर्सिटी के पुरातत्व विभाग ने यह उत्खनन किया और यहाँ बौद्ध विहार मिला I उसके बाद स्तूप मिला और स्तूप के अंदर से महाकारूणिक बुद्ध की श्रेष्ठ धातुएं (अस्थियां) मिली हैं जो एक कास्केट (तांबा का बनाया हुआ) में रखी हुई हैं I वर्तमान में यह कास्केट बड़ोदरा के संग्रहालय में है I

Keywords: धम्म, महाविहार, धातु अस्थियां, विहार, महास्तूप, स्तूप, शरीरस्तूप, प्रतीत्यसमुत्पाद, अविद्या, संस्कार, षडायतन, तृष्णा

गुजरात की भूमि प्राचीन काल से ही धम्मभूमि रही है और महाकारूणिक बुद्ध के विचारों से आलोकित रही है I गुजरात के अधिकांश जिलों में आज भी हमें बौद्ध धम्म से जुड़े अनगिनत अवशेष देखने को मिल रहे हैं और अभी भी खुदाई में बौद्ध धम्म से जुड़े अवशेष बहुतायत में प्राप्त हो रहे हैं I गुजरात के प्रसिद्ध बौद्ध स्थलों में देवनी मोरी (शामलाजी), गिरिनगर (जूनागढ़), आनंदपुर (वड़नगर), तारंगा, भरूच, कच्छ, उना साणावाक्य, खाम्भलिडा आदि हैं I इनमें देवनी मोरी का महत्वपूर्ण स्थान है क्योंकि यह धम्म नगरी थी और यहाँ से महाकारूणिक बुद्ध की श्रेष्ठ धातुएं (अस्थियां) प्राप्त हुई हैं I

देवनी मोरी उत्तर गुजरात में अरवल्ली जिले में तहसील भिलोड़ा में मेश्वो नदी के सामने तट पर स्थित है I यहां भोज राजा की टेकरी स्थित है जहां उत्खनन हुआ है और महाविहार, पश्चिमी क्षत्रप राजाओं के सिक्के, और बुद्ध की श्रेष्ठ धातुओं (अस्थियों) का अलंकृत पात्र (Box) प्राप्त हुआ है I देवनी मोरी में पश्चिमी क्षत्रप राजाओं (ई.स. २३ – ई.स. ४००) के समय का महा विहार मिला है I यह स्थान राजस्थान के डुंगरपुर और गुजरात की सीमा पर स्थित है और यहाँ अरवल्ली पर्वतमाला के छोटे–मोटे पहाड़ हैं I यह स्थान अत्यंत सुंदर और मनोहर है I ११ फरवरी १९६० को बड़ोदरा की महाराजा सयाजीराव यूनिवर्सिटी के पुरातत्व विभाग ने यह उत्खनन किया और यहाँ बौद्ध विहार मिला I उसके बाद स्तूप मिला और स्तूप के अंदर से महाकारूणिक बुद्ध की श्रेष्ठ धातुएं (अस्थियां) मिली हैं जो एक कास्केट (तांबा का बनाया हुआ) में रखी हुई हैं I वर्तमान में यह कास्केट बड़ोदरा के संग्रहालय में है I

देवनी मोरी का महाविहार ईंटों से बनाया हुआ है I मूल विहार के पास में ही एक और विशाल विहार का निर्माण किया गया था जो १३५ फीट लम्बा और १२५ फिट चौड़ा है I बीच में एक चौक है और चौक से सटे कई कमरे हैं I विहार की खुली जगह के पास में एक साथ आठ कमरे मिले हैं I यह कमरे १० फिट लम्बे और ९ फिट चौड़े हैं और ३ फिट चौड़ा प्रवेशद्वार है I विहार से क्षत्रप राजाओं के सिक्के और पालिश किए हुए बर्तन भी मिले हैं I ई.स. २०५ में अग्निवर्मा और सुदर्शन नाम के बौद्ध भिक्खुओं ने यहाँ मूल विहार के उत्तर में एक विहार का निर्माण करवाया था I

देवनी मोरी का महास्तूप अत्यंत भव्य था I स्तूप के चारों और प्रदक्षिणा पथ है और स्तूप के चारों ओर करुणासागर बुद्ध की प्रतिमाएं देखने को मिलती हैं I इसी महास्तूप में से हमें प्रसिद्ध तांबे का कास्केट मिला है जिसमें तथागत की श्रेष्ठ धातुएं (अस्थियां) मिली हैं I पीपल के पान के आकार के वलयों के बीच में बुद्ध की श्रेष्ठ धातुएं (अस्थियां) एक छोटे डिब्बे में रखी गई हैं I इस डिब्बे को माटी के घड़े के बीच में रख कर ईंटों से घेरा गया था I इस पत्थर के डिब्बे के अंदर तांबे की एक डिब्बी (casket) रखी हुई थी, जिसमें **बुद्ध के श्रेष्ठ धातुएं (अस्थियां) सोने की बोतल, रेशमी वस्त्र की दो थैलियां, चंदन के जले हुए टुकड़े** आदि मिले हैं I बौद्ध ग्रंथो में बुद्ध को **'दशबल'** कहा गया है I इसीलिए यह **दशबल के श्रेष्ठ धातुएं (अस्थियां)** के नाम से जाने जाते हैं I इस डिब्बे में दशबल के शरीर अवशेष को सुरक्षित रखकर ई.स. २०५ में कला का उत्तम नमूनेदार स्तूप निर्मित किया गया था I यह स्तूप वास्तव में **'शरीर स्तूप'** है अत: इसका अत्यधिक महत्त्व है I

इस तांबे की डिब्बी के ऊपर, बाहर की ओर, अंदर की ओर, धम्मलिपि में पालि भाषा में 'निदान सूत्र' या 'प्रतीत्यसमुत्पाद' उत्कीर्ण हैं जो कि बौद्ध धम्म का प्रसिद्ध सिद्धांत हैंI तथागत द्वारा कहा गया यह उत्तम सिद्धांत है जिसमें बारह निदानों की उत्पत्ति और निरोध की बात कही गई है I इस डिब्बी के ऊपर यह गाथा लिखी हुई है :

ये धम्मा हेतुप्र भवाहेतु तेषां तथागतो आवहा I
तेषां च यो निरोध एवं वादी महाश्रमण: II

http://vidyajournal.org

VIDYA - A JOURNAL OF GUJARAT UNIVERSITY

Peer-Reviewed, Multidisciplinary & Multilingual Journal

ISSN: 2321-1520 **E-ISSN:** 2583-3537

यह पूरी गाथा अस्सजि नामक बौद्ध भिक्खु ने सारिपुत्र नामक परिव्राजक को राजगृह में सुनाई थी तब सारिपुत्र ने अस्सजि से पूछा कि, "आपके मार्गदर्शक कौन हैं और उनका क्या मत है ?" तब अस्सजि ने उत्तर में कहा कि "जो दुख कारण से उत्पन्न होते हैं, उनके कारणों को तथागत ने कहा है और उन कारणों का निरोध कैसे किया जाय यह बात भी उन्होंने बताई है I यही हमारे शास्ता का मत है I" बुद्ध द्वारा कही गई निम्नांकित गाथाएं भी डिब्बी के ऊपर लिखी गई हैं I

एवम्मे मे सुभं एक समये भगवा सावत्थिय विहरती जूतवणे अणाथ
पिंडीकस्स आरामे तत्रहु भगवा भिक्खु आमन्त्रित्ता भिक्खुवेति भन्तेति I
ते भिक्षु भगवतो पुच्चं संसु भगवा एतदवोच II
पदीच्च समूपादं वो भिक्खवे दे से संत साधु सुसूण धमण
सिकुरोध भासिस्सामि सुहव्वो एवं भन्तेति ते भिक्खु भगवो I
पुच्च सुसू भगवा एत (द) वोच कतमो च भिक्खवे
पदिच्च समुपादो II सुविज्जा पुच्चया संक्खारा संक्खारा पुच्चयं विडांणं II
विडाणो पुच्चयं नामरूप II नामरूप पुच्चया च्छीलायतनं II च्छीलायतनं पुच्चया फस्सो II
फस्सो पुच्चया वेतणो II वेतणो पुच्चया तन्हा II तन्हा पुच्चया उवादाण II
उवादाण पुच्चया भवो II भव पुच्चया ज्जाति पुच्चया जरामरण सोकु परिदेव दुक्खदोमणस्सरपायासा संभन्ति एमेति स्सकेवलस्स दुक्ख खंधस्स समुदयो होति II

तथागत ने कहा कि हे भिक्खुओ ! यही पटिच्च-समुत्पाद कार्यकरण का सिद्धांत है I अविद्या से संस्कार, संस्कार से विज्ञान, विज्ञान से नामरूप, नामरूप प्रत्यय से षडायतन, षडायतन प्रत्यय से स्पर्श निर्मित होते हैं I स्पर्श से वेदना उत्पन्न होती है, वेदना प्रत्यय से तृष्णा उत्पन्न होती है, तृष्णा के प्रत्यय से उपादान उत्पन्न होते है, उपादान प्रत्यय से भव उत्पन्न होता है, भव के प्रत्यय से जन्म होता है I जन्म के प्रत्यय से जरा-मरण, शोकपरिदेव, दुःखदौमनस्स तथा उपायस (मानसिक संताप) उत्पन्न होता है I इस प्रकार लोक में दुःख स्कंध उदय होता है I भिक्खुओं यही पटिच्च-समुत्पाद है I इसकी वजह से यह उत्पन्न होता है और इसके न होने से यह उत्पन्न नहीं होता I यह ज्ञान होना पटिच्च समुत्पाद है I बुद्ध ने यह सिद्धांत समझाया था I तथागत कहते हैं कि जो प्रतीत्यसमुत्पाद को देखता है वह धम्म को देखता है और जो धम्म को देखता है वही प्रतीत्यसमुत्पाद को देखता है I इस सिद्धांत की खोज महाकारूणिक बुद्ध ने बोधगया में बोधिवृक्ष के नीचे वैशाखी पूर्णिमा को प्राप्त की थी I

बौद्ध धम्म के इतिहास में देवनी मोरी प्रसिद्ध स्थान है क्योंकि यहीं से सम्यक सम्बुद्ध के शरीर अवशेष प्राप्त हुए हैं I बुद्ध के अवशेष मिलना अपने आप में बहुत बड़ी बात है I इस डिब्बी पर अंकित 'प्रतीत्यसमुत्पाद' की गाथायें मनुष्य जीवन की अहमियत दर्शाती हैं I यह विज्ञान है जिसकी खोज बुद्ध ने की थी I देवनी मोरी से हमें महाकारूणिक बुद्ध की २० प्रतिमाएं भी मिली हैं जो दर्शाती हैं कि गुजरात में क्षत्रप काल में बौद्ध धम्म बहुतायत प्रचलित था I यह अभिलेख इसका ध्योतक है I देवनी मोरी प्राचीन विश्व विद्यालय और धम्मक्षेत्र था I इस महास्तूप से क्षत्रप काल के बहुत सारे सिक्के मिले हैं जो दर्शाते हैं कि क्षत्रप राजा बौद्धधम्म के अनुयायी थे I इस विहार से मिले सिक्के, उन पर छपा लेख और स्थापत्य बौद्ध धम्म का है I

देवनी मोरी हमारी बौद्ध विरासत है, विश्वभर के बौद्धों के लिए यह गौरवान्वित करने वाला स्थान हैं I गुजरात की इस भव्य गौरवशाली विरासत को देखना, अनुभव करना और उसकी सपरिवार धम्मयात्रा करना प्रत्येक बौद्ध अनुयायी का प्रमुख कर्तव्य है I हमारे शास्ता बुद्ध की शरीर धातुएं (अस्थियां) अवशेष यहाँ से प्राप्त हुए हैं, जो अपने आप में ऐतिहासिक बात है I देवनी मोरी बौद्ध धम्म का बहुत बड़ा केंद्र है और हमारी जिम्मेदारी बनती है कि हम उसे प्रचारित करें और उसके संवर्धन के लिए भी प्रयास करें I

गुजरात राज्य सरकार और भारत सरकार से भी हम सबका विनम्र अनुरोध है कि बौद्ध प्रमुख स्थल देवनी मोरी को नेशनल हेरिटेज का दर्जा दिया जाय, उसे संवर्धित किया जाय एवं सुरक्षित किया जाय I विश्व के बौद्धो के लिए देवनी मोरी का बहुत ही अहम स्थान है, विश्व के बौद्धो में उसका बड़ा सन्मान है I देवनी मोरी विश्व विरासत है I देवनी मोरी को बौद्ध प्रवासन के संदर्भ में प्रसारित किया जाय तो विश्व के बुद्ध अनुयायी बड़ी आस्था से देवनी मोरी आएंगे और इससे राज्य एवं केंद्र सरकार को प्रवासन क्षेत्र से काफी फायदा मिलेगा I इनमें सबसे अहम बात यह होगी कि इससे बुद्ध के विचारों से ज्यादा से ज्यादा लोग लाभान्वित होंगे I आज पूरे विश्व को तथागत बुद्ध द्वारा उपदिष्ट प्रेम, मैत्री, करुणा और शांति की नितांत आवश्यकता है I

संदर्भ

1. मेहता, डा. आर.एन., एक्सकवेशन एट देवनी मोरी, डिपार्टमेंट ऑफ़ अर्क्योलोजी एंड ऐन्सियंट हिस्ट्री, फेकल्टी ऑफ़ आर्ट्स, एम.एस.यूनिवर्सिटी ऑफ़ वड़ोदरा, मार्च १९६६
2. हर्ष, डा. जयवर्धन, उत्तर गुजरात में बौद्धधर्म, मैत्री प्रकाशन, महावीर विद्यालय के सामने, इसनपुर, अहमदबाद, ओक्टोबर २०१२

http://vidyajournal.org